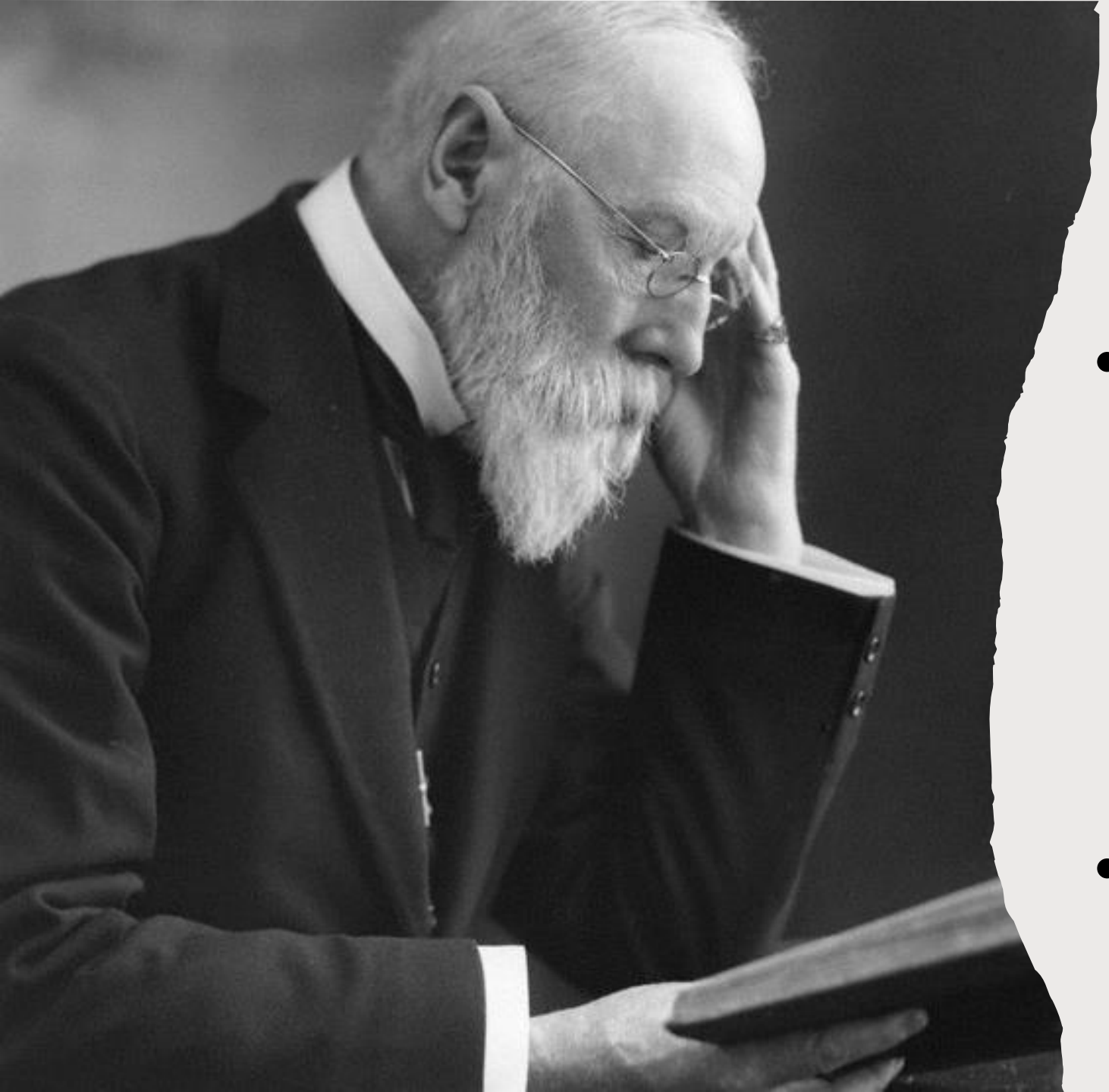

राजस्थान की बोलियाँ

- 1912 ई. में जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने लिंग्वेस्टिंग सर्वे ऑफ इण्डिया नामक पुस्तक लिखी जिसमें राजस्थानी भाषा का वर्णन मिलता है।

- ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा कोपाँच भागों में बांटा था।

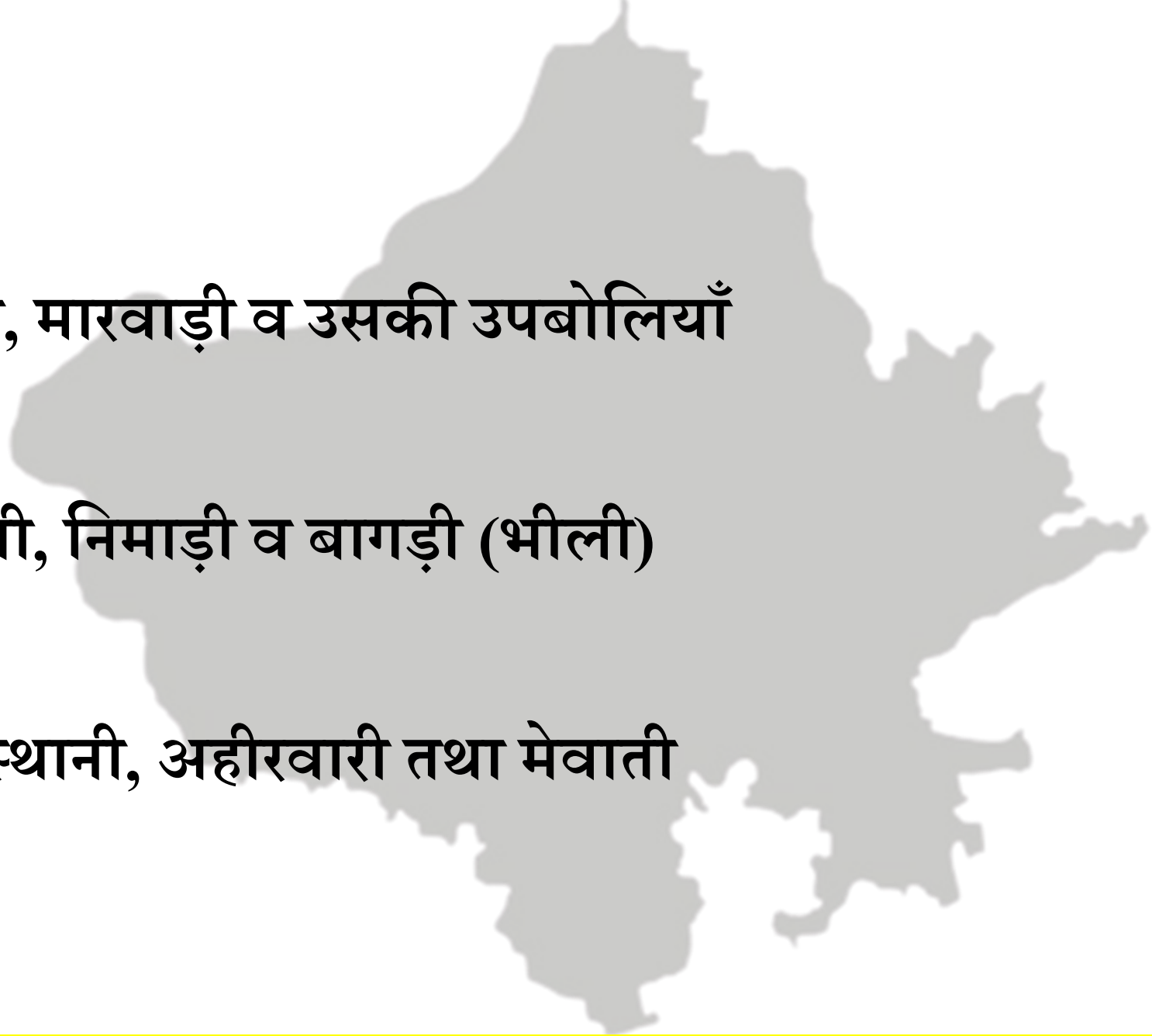

I. पश्चिमी राजस्थानी, मारवाड़ी व उसकी उपबोलियाँ

II. दक्षिणी राजस्थानी, निमाड़ी व बागड़ी (भीली)

III. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी, अहीरवारी तथा मेवाती

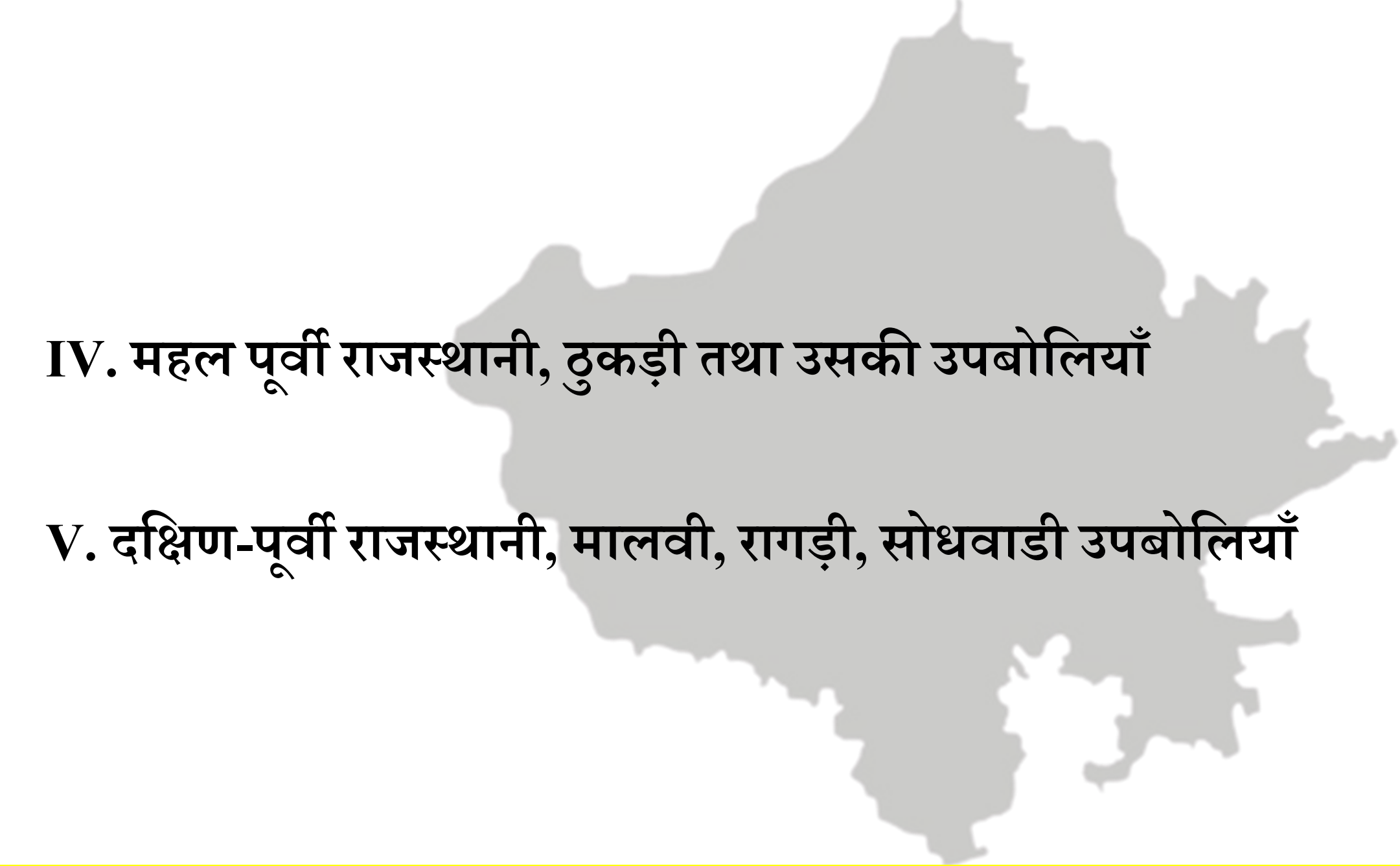

IV. महल पूर्वी राजस्थानी, ठुकड़ी तथा उसकी उपबोलियाँ

V. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी, मालवी, रागड़ी, सोधवाडी उपबोलियाँ

सामान्य वर्गीकरण

मारवाडी	ढूढाँड़ी	मालवी	वागडी	मेवाती	अहीरवाटी	जगरौती	धावड़ी	सोंधवाड़ी
मेवाड़ी	हाड़ौती	नीमाड़ी						
खराड़ी	चौरासी	रांगडी						
गौडवाडी	नागरचोल							
बागड़ी	काठेडी							
देवड़ावाटी	राजावादी							
शेखावाटी	तोरावाटी							
घाटी/ धाटकी								
थली								

1. मारवाड़ी- मारवाड़ क्षेत्र :-

- पश्चिमी राजस्थान विशेषकृत-जोधपुर, नागौर, पाली, बीकानेर, बाड़मेर-जालौर ।

- उदाहरण- मीरा बाई की पुस्तकें
  - ढोला मारू रा दूहा
  - राजिया रा दूहा
  - वेलि किसण रूक्मणि री।
  - जैन साहित्य-मरूभाषा
  - चारण साहित्य

प्रमुख उपबोलियां-

(i) मेवाड़ी :-

- मारवाड़ी की उपबोली।

- मेवाड़ क्षेत्र में (उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, व भीलवाड़ा क्षेत्र) बोली जाती है।

साहित्य –

- कुंभा के नाटक
- कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति
- लक्ष्मी कुमारी चुंडावत की पुस्तकें
- चतुरसिंह की पुस्तकें

(ii) शेखावाटी:-

- राव शेखा के क्षेत्र में बोली जाने वाली।
- मारवाड़ी की उपबोली।
- क्षेत्र चुरू, सीकर, झुंझुनूं
- ढूढाँड़ी का प्रभाव ।

(iii) बांगड़ी –

- क्षेत्र - बांगड़ प्रदेश (हनुमानगढ़ श्रीगंगानगर, चुरू क्षेत्र)
- यह भी मारवाड़ी की उपबोली है ।

(iv) थली :-

- क्षेत्र- जैसलमेर, बीकानेर, चुरू

(v) गोड़वाड़ी :-

- क्षेत्र - पाली, जालौर
- साहित्य - बीसलदेव रासो

(vi) खैराड़ी :-

- क्षेत्र- शाहपुरा (भीलवाड़ा), बूँदी के कुछ भाग
- मेवाड़ी+हाड़ौती+ढूँढाड़ी का मिश्रण

(vii) देवड़ावाटी- सिरोही

(viii) धाटी / धाटकी:-

- मारवाड़ी की उपबोली

- क्षेत्र - बाड़मेर (पाकिस्तान के सीमा वाला क्षेत्र)

2. बुढाँड़ी :-

- क्षेत्र - जयपुर, टोंक दौसा, किशनगढ़ व लावा ठिकाना में।
- साहित्य- दादू सम्प्रदाय की पुस्तकें
- गुमानीराम कायस्थ ने आइन-ए-अकबरी का ठुँढाड़ी में अनुवाद किया।
- ईसाई मिशनरियों ने बाइबिल का कुंठाडी में अनुवाद किया।

प्रमुख उपबोलियाँ - तोरावाटी, राजावाटी, नागरचोल-

(i) **हाड़ौती** - ढूढाँड़ी की उपबोली।

- क्षेत्र- कोटा, बूँदी झालावाड़. बारा।
- साहित्य - सूर्यमल मीसण (बूंदी) की रचनाएँ।

(ii) तोरावाटी - क्षेत्र झुंझुनू, सीकर, उत्तरी जयपुर क्षेत्रों में।

(iii) नागरचोल- क्षेत्र - सवाईमाधोपुर तथा टोंक क्षेत्र में।

(iv) काठेडी - ढुँढाड़ी की उपबोली।

- जयपुर के दक्षिणी क्षेत्र में बोली जाती है।

(v) **चौरासी -** शाहपुरा (जयपुर) एवं टोंक।

(vi) **राजावाटी -** पूर्वी जयपुर के कुछ क्षेत्रों में बोली जाने वाली।

3. मालवी :-

- क्षेत्र- प्रतापगढ़, कोटा, झालावाड़ व मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र।

- मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की भाषा जो मूल रूप से मारवाड़ी व मेवाड़ी का मिश्रणहै।

उपबोलियाँ :–

(i) नीमाड़ी - इसे मालवी की उपबोली भी कहा जाता है।

- मध्यप्रदेश का निमाड क्षेत्र जैसे- धार, बुरहानपुर व खरगौन में बोली जाती हैं।

- दक्षिणी राजस्थानी भी कहा जाता है।

(ii) रांगडी - मालवा क्षेत्र के राजपूतों द्वारा बोली जाती है।

4. वागड़ी :–

- डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा क्षेत्र में।
- गुजराती प्रभाव दिखाई देता है।
- जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसे भीली कहा था।
- साहित्य - संत मावजी की रचनाएँ।

5. मेवाती :–

- क्षेत्र- अलवर, भरतपुर।
- ब्रजभाषा का प्रभाव।
- साहित्य चरणदासी व लालदासी सम्प्रदाय की रचनाएँ।

6. अहीरवाटी :–

- क्षेत्र- जयपुर के कोटपुतली से लेकर अलवर के बहरोड तक।
- इस इलाके को राठ भी कहते हैं। इसलिए भाषा को अहीरवाटी कहा जाता है।
- अलीबख्शी ख्याल इसी भाषा में किया जाता है।
- साहित्य- जोधराज की हम्मीर रासो
- शंकर राव की भीम विलास

7. जगरौती :- क्षेत्र करौली

8. धावड़ी :- क्षेत्र- उदयपुर

9. सोंधवाड़ी :- क्षेत्र- झालावाड़

info.class24@gmail.com

www.class24.study

Class24 YouTube Channel

RAS PRE-2023 Special Batch

RAS से बने RAS

Call for enquiry: 7849841445, 8302972601, 7877518210

RAS PRE-2023 Special Batch

Course Features

- कम्पलीट कोर्स कवर
- Doubt Session
- लाइव और रिकार्डेड लेक्टर्स
- प्रिंटेबल PDFs
- गाइडेंस प्रोग्राम

TEST SERIES

RAS से बने RAS

Course Fee: ~~₹ 4999/-~~ ₹ 2999/-

Starts From 10th April

Call for enquiry: 7849841445, 8302972601, 7877518210

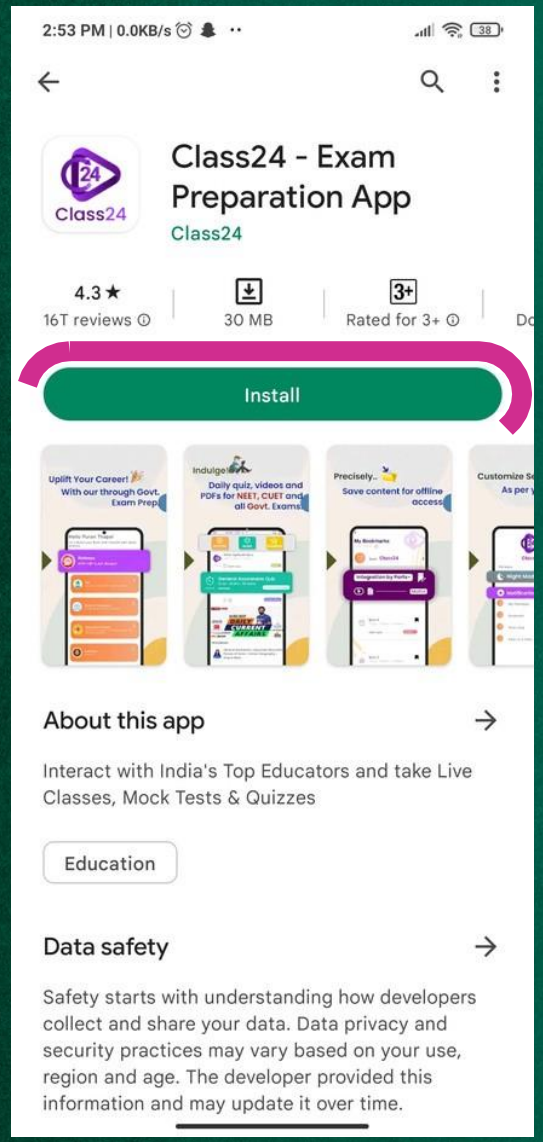

STEP 1

STEP 2

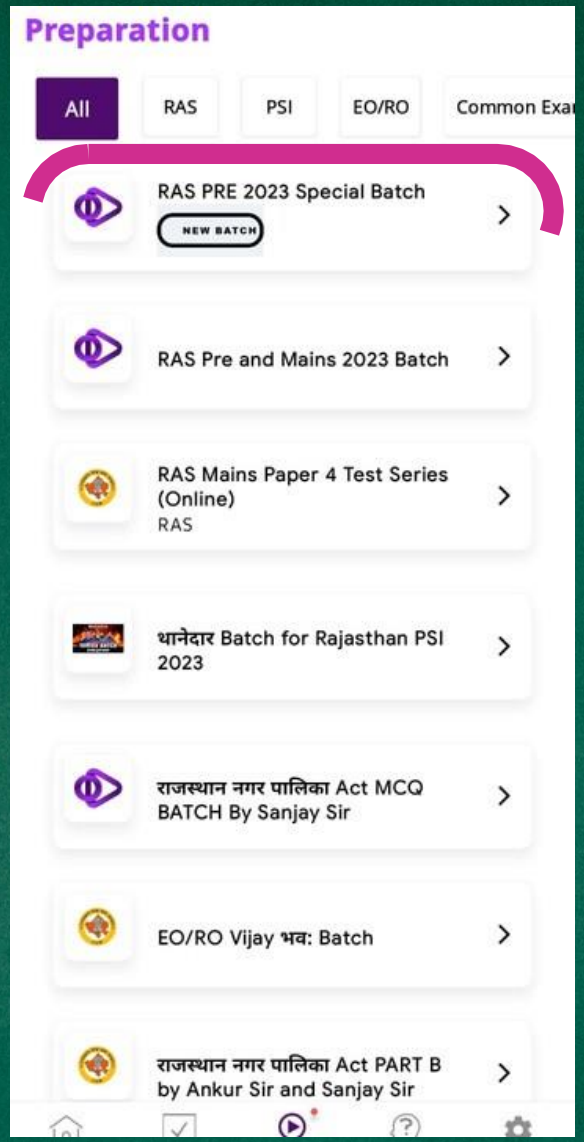

STEP 3

STEP 4

राजस्थान का साहित्य

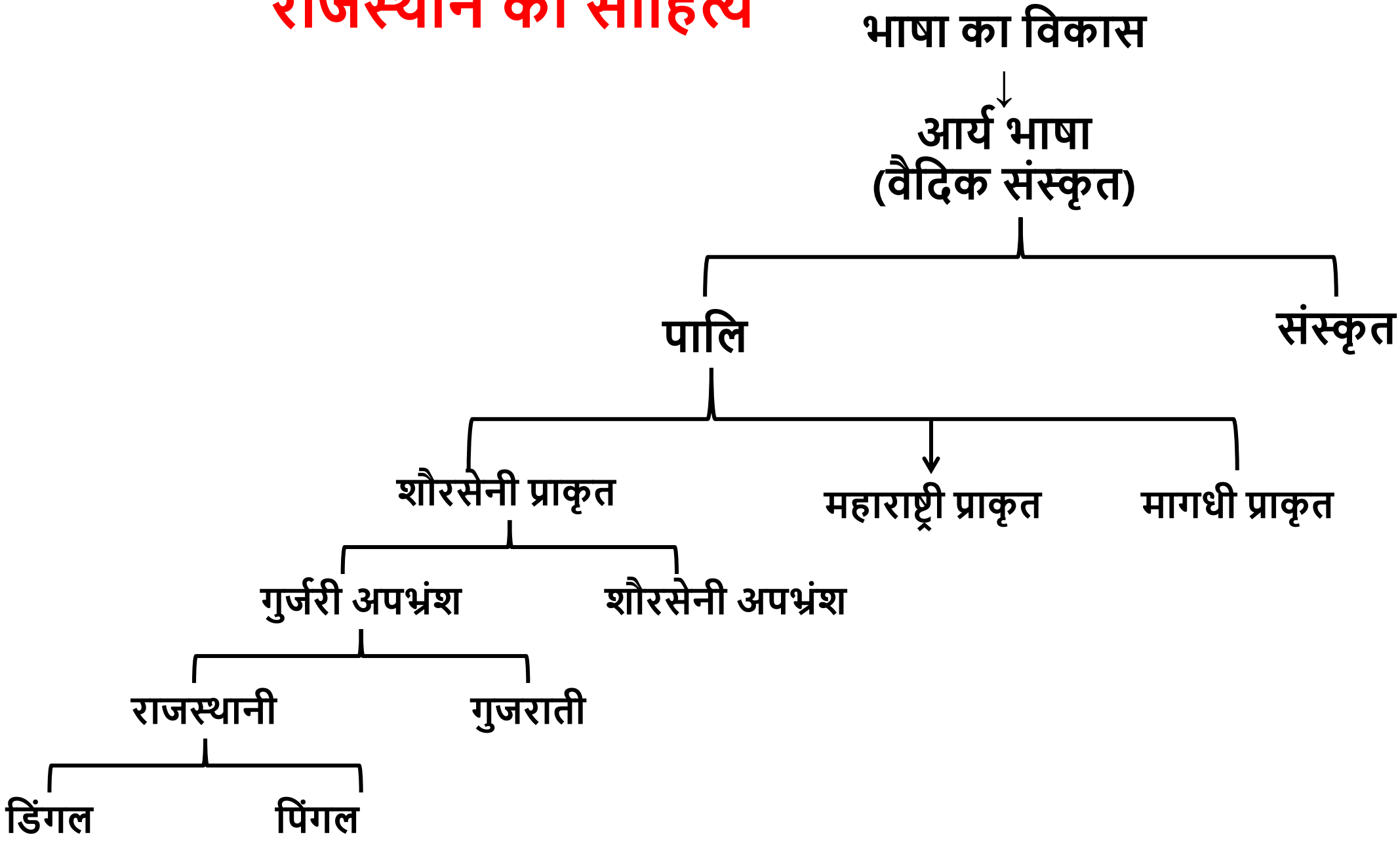
भाषा का विकास
आर्य भाषा
(वैदिक संस्कृत)
पालि
संस्कृत
शौरसेनी प्राकृत
महाराष्ट्री प्राकृत
मागधी प्राकृत
गुर्जरी अपभ्रंश
शौरसेनी अपभ्रंश
राजस्थानी
गुजराती
डिंगल
पिंगल

- राजस्थानी भाषा के विकास के संबंध में तीन अपभ्रंश भाषाओं का उल्लेख किया जाता है तथा प्रत्येक विद्वान अपने मतानुसार अपभ्रंश का उल्लेख करता है जिसमें 'शौरसेनी अपभ्रंश', 'नागर अपभ्रंश तथा मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का उल्लेख किया जाता है। इन सबमें से 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का मत अधिक उचित लगता है क्योंकि 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' से ही मरूभाषा (राजस्थानी) तथा गुर्जरी से गुजराती भाषा का विकास हुआ।

डिंगल

1. पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यिक रूप।
2. राजस्थानी पर गुजराती भाषा का प्रभाव पर राजस्थानी का शुद्ध रूप।
3. वीर रस का प्रयोग अधिक।
4. चारण साहित्य का अधिक सृजन। जैसे - बांकीदास की रचनाएं।

पिंगल

1. पूर्वी राजस्थान का साहित्यिक रूप।
2. राजस्थानी पर ब्रज भाषा का प्रभाव।
3. श्रृंगार रस का प्रयोग अधिक।
4. भट्ट कवियों की रचनाएं अधिक लिखी गई जैसे- पृथ्वी भट्ट (चन्दबरदाई) की पृथ्वीराज रासौ।

- **राजस्थानी भाषा का विकास :-**

- गुर्जरी अपभ्रंश - 11वीं से 13वीं शताब्दी तक।
- प्राचीन राजस्थानी - 13वीं से 16वीं शताब्दी तक (जैन साहित्य)।
- मध्यकालीन राजस्थानी - 16वीं से 18वीं शताब्दी तक (चारण साहित्य)।
- आधुनिक राजस्थानी - 18वी शताब्दी से लेकर अब तक (विभिन्न विषयों पर)

- राजस्थानी साहित्य की इतिहास परम्परा को हम निम्न रूप में भी प्रस्तुत कर सकते है।

1. **प्राचीनकाल (वीरगाथा काल) -** 1050 ई. से 1450 ई. तक।

- इस काल में भारत पर निरन्तर पश्चिमी आक्रमण हुए जिनका सामना यहाँ के राजाओं ने किया। अतः विकट परिस्थितियों में संघर्ष की भावना बनाए रखने के लिए साहित्य में वीर नायकों का आदर्श प्रस्तुत किया गया। इस काल में जैन रचनाकारों की रचनाएं भी उल्लेखनीय रही है।
- श्रीधर व्यास की रणमल छन्द इस काल की महत्वपूर्ण रचना है।

2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) - 1450 ई. से 1650 ई. तक।

- राजस्थान के इतिहास में युद्धों ने धर्म व संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया, तथा साम्राज्यवादी शासकों द्वारा धर्म के प्रचार-प्रसार की प्रवृत्ति दिखाई दी। ऐसे समय में विभिन्न संतों ने अपनी कलम के माध्यम से भेदभाव रहित सद्समाज की कल्पना को मूर्तरूप प्रदान किया। भक्तिकाल की रचनाओं में दादूपंथी, समरनेही, अलखिया, जसनाथी आदि निर्गुण सम्प्रदायों के साथ मीराबाई के पद, पृथ्वीराज राठौड़ की 'वेलि किसण रूकमणि री' माधोदास दधवाडिया की "रामरासों' ईसरदास की 'हरिरस' ओर 'देवियांण' सायांजी झूला की 'नागदमण' आदि सगुण रचनाएं है।

4. **आधुनिक काल (विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त) -** 1850 ई. से अब तक।

- 1857 ई. की क्रान्ति के बाद समाज में नई चेतना का संचार हुआ। जिसका प्रभाव साहित्य पर भी देखने को मिला।
- राजस्थानी साहित्य में चेतना का शंखनाद मारवाड़ के कवि राजा बांकिदास और बूँदी के सूर्यमल्ल मीसण ने किया।
- "उद्योतन सूरि" ने 8वीं शताब्दी में "कुवलयमाला" नामक पुस्तक लिखी इसमें 18 भाषाओं का वर्णन है। जिनमें मरू भाषा भी शामिल है।
- "अबुल फजल" ने अपनी पुस्तक "आइन-ए-अकबरी" में मारवाड़ी भाषा का उल्लेख किया है।
- जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक Linguistic Survey of India में (1912) राजस्थानी भाषा का वर्णन किया।

लेखक	पुस्तक
1. वज्रसेन सुरि	भरतेश्वर बाहुबली घोर (राजस्थानी की सबसे प्राचीन किताब)
2. शालिभद्र सूरि	भरतेश्वर बाहुबली रास (1184) (सन् बताने वाली सबसे प्राचीन राजस्थानी पुस्तक)
3. नयनचन्द्र सूरि ये ग्वालियर के तोमर राजा वीरम के दरबारी विद्वान थे।	हम्मीर महाकाव्य
4. सारंगधर	हम्मीर रासौ
5. जोधराज (नीमराणा के राजा चन्द्रभान के दरबारी विद्वान थे)	हम्मीर रासो (अहीरवाटी भाषा में लिखी गई हैं।)
6. गिरधर आसियाँ	सगत सिंघ रासौ (महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह का वर्णन है।)
7. दलपत विजय	खुमाण रासौ (बापा रावल से लेकर राज सिंह तक का वर्णन है।)

8. दयाल	राणा रासौ (बापा रावल से लेकर जयसिंह तक का वर्णन है।)
9. नल्ल सिंह	विजयपाल रासौ (बयाना के राजा विजयपाल का वर्णन है।)
10. डूंगरसिंह	शत्रुसाल रासौ (बूँदी के राजा शत्रुसाल का वर्णन)
11. दुरसा आढ़ा (अकबर के दरबार में थे) इन्होनें महाराणा प्रताप एवं राव चन्द्रसेन के देशप्रेम की भावना का यशोगान किया है।	1. विरूद छहतरि 2. किरतार बावनी 3. राव सुरताण रा कवित्त 4. विरम देव सोलंकी रा दूहा
12. कवि कल्लोल	ढोला-मारू रा दूहा

13. कुशललाभ (जैसलमेर के राजा हरराज के दरबार में था)	1. ढोला-मारू री चौपाई 2. पिंगल शिरोमणि
14. केशवदास गाडण (गजसिंह का दरबारी विद्वान)	1. गजगुणरूपक 2. अमरसिंह जी रा दूहा 3. विवेक वार्ता (उपनिषदों पर टीका)
15. जगजीवन भट्ट	1. अजीतोदय (जोधपुर के राजा अजीतसिंह का वर्णन) 2. अभयोदय (जोधपुर के राजा अभयसिंह का वर्णन)
16. जग्गा खिडिया	वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासोत री रतनसिंह राठौड रतलाम का राजा था। जो धरमत के युद्ध में दारा की तरफ से औरंगजेब के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।
17. कृपाराम खिड़िया (सीकर के राजा लक्ष्मणसिंह के दरबारी)	राजिया रा दूहा

18. खेतसी सादूं	भाषा भारथ (महाभारत का डिंगल अनुवाद)
19. मुरारिदास (जोधपुर राजा जसवन्तसिंह द्वितीय के दरबारी)	जसवन्त जसो भूषण (अलंकारो का अधिक प्रयोग)
20. जान कवि (न्यामत खाँ) (फतेहपुर के कायमखानी नवाब थे)	कायम रासौ
21. श्रीधर	रणमल छन्द रणमल ईडर का राजा था। जिसने पाटन के सूबेदार जफर खाँ को हराया था।
22. जोगीदास	हरि पिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ़ के राजा हरिसिंह का वर्णन)
23. जिनराज सूरी	शालिभद्र रास, गजसुकमाल रास कवयन्ना रास

24. हरिनाभ	केसरी सिंह समर केसरी सिंह खण्डेला का सामन्त था।
25. वखतावर जी यह मेवाड़ महाराणा स्वरूप सिंह का दरबारी विद्वान था।	केहर प्रकास
26. बादर ढाढी	वीरमायण (मारवाड़ के राजा वीरमदेव की जानकारी)
27. कवि नरोत्तम	मान चरित्र रासौ (आमेर के राजा मानसिंह की जानकारी)
28. आचार्य हरिभद्र सूरि	समराइच्चकहा (उज्जियिनी के राजा समरादित्य व अग्नि शर्मा की जानकारी)
29. आचार्य मेरूतुंग	प्रबन्ध चिन्तामणि (पृथ्वीराज चौहान की जानकारी)

30. जीवधर	अमरसार/अमररासौ (महाराणा प्रताप व अमरसिंह की जानकारी)
31. हेमचन्द्र	महावीर चरित (कुमारपाल चालुक्य की जानकारी)
32. द्वारिकादास भट्ट (सवाई प्रताप सिंह का दरबारी विद्वान)	रागचन्द्रिका
33. सदाशिव भट्ट	राजविनोद (बीकानेर के कल्याणमल की जानकारी)
34. छत्र कुवंरी (किशनगढ़ नरेश सांवतसिंह की पौत्री)	प्रेम विनोद।
35. मुंशी भूसावन लाल	अमीरनामा (टोंक के अमीर खाँ की जानकारी)
36. बख्तराम साह	बुद्धिविलास (जयपुर की स्थापना का वर्णन)

आधुनिक राजस्थानी साहित्य

लेखक	पुस्तक
1. सूर्यमल्ल मीसण (बूंदी के राजा रामसिंह द्वितीय के दरबारी) इन्होंने राजस्थान में राष्ट्रवादी भावनाओं का संचार किया था।	वंश भास्कर, वीर सतसई, बलवन्त विलास, सती रासौ, छन्द मयूख, राम रंजाट
2. कन्हैयालाल सेठिया इनका जन्म 11 सितम्बर 1919 ई. को सुजानगढ़ (चूरू) में हुआ था।	पाथल और पीथल, धरती धोरा री, कूं कूं, मिंझर, निर्ग्रन्थ
3. विजयदान देथा बिज्जी :- बिज्जी उपनाम से प्रसिद्ध देथा को 1974 ई. में केन्द्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1992 ई. में भारतीय भाषा परिषद पुरस्कार, 2002 ई. में बिहारी पुरस्कार 2006 ई. में साहित्य चूड़ामणि पुरस्कार, 2007 ई. में पद्मश्री एवं 2012 ई. में राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया। उनकी एक लोककथा पर मणि कौल ने पहले दुविधा फिल्म बनाई, फिर इसी कथा पर अमोल पालेकर ने पहेली नामक फिल्म बनाई।	1. बातां री फुलवारी (14 भाग), दुविधा तीडो राव, मां रो बदलो, अलेखूं हिटलर, लजवन्ती, सपनप्रिया, अन्तराल, उलझन, बापू के तीन हत्यारे, चौधराईन की चतुराई, चरणदास चोर।

4. लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत	माँझल रात, कै रे चकवा बात, टाबरां री बातां, अमोलक बातां, गिर ऊँचा ऊँचा गढ़ा, गजबण
5. श्री लाल नथमल जोशी	एक बीदंणी दो बींद, परण्योडी कुवांरी धोरां रो धोरी (एल. मी तेस्सीतोरी पर आधारित), आभै पटकी (विधवा विवाह की समस्या पर आधारित), सबडका मैंदी, कनीर अर गुलाब
6. यादवेन्द्र शर्मा "चन्द्र" इन्होनें राजस्थान के सामन्ती अतीत का वर्णन किया है।	हूँ मोरी किण पीव री खम्मा अन्नदाता जनानी ड्योढी, हजार घोड़ो का सवार, जमारो, ताश रो घर, मेहन्दी के फूल, चाँदा सेठाणी, समन्द अर थार, जोग संजोग, मिट्टी का कलंक।
7. नारायण सिंह भाटी	मीरा, दुर्गादास, परमवीर, ओल्यू, बरसां सा डिगोड़ा डूंगर लांघिया
8. रांघेय राघव	घरोन्दे, मुर्दों का टीला (मोहनजोदड़ो पर), कब तक पुकारू, आज की आवाज, काका

9. शिवचन्द भरतिया आधुनिक राजस्थानी का पहला साहित्यकार।	1. कनक सुन्दर (उपन्यास) 2. केसर विलास (नाटक) 3. विश्रान्त प्रवास (कहानी) 4. फाटका जंजाल 5. बुढापा की सगाई
10. चन्द्र सिंह बिरकाली	लू, बादली, साँझ - बालासाद, कह – मुकरणी
11. जहूर खाँ मेहर	राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, अर्जुन आकी आँख, धर मंजला धर कोसां।
12. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा। राजस्थान के इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का जन्म 1863 ई. में रोहिड़ा (सिरोही) में हुआ था। प्राचीन लिपि का अच्छा ज्ञान होने के कारण इन्होने भारतीय प्राचीन लिपिमाला नामक ग्रन्थ की रचना की। अंग्रेजों ने इन्हें महामहोपाध्याय एवं रायबहादुर की उपाधि प्रदान की।	1. प्राचीन लिपिमाला 2. राजपूताने का इतिहास 3. जेम्स टॉड का जीवन चरित

13. चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी"	1. उसने कहा था
14. मणिमधुकर	पग केरो, सफेद मेमने सोजती गेट, आलीजा धरा आज्यो
15. रेवंतदान चारण (इन्होंने सामन्ती शोषण के खिलाफ लिखा था)	1. नेहरू ने ओलमा 2. बरखा बीनणी
16. सत्यप्रकाश जोशी	1. राधा – जहाँ आम राजस्थानी साहित्य में युद्धों का महिमा मण्डन किया गया है, वहीं 1960 ई. में रचित इस कविता में राधा भगवान कृष्ण को महाभारत का युद्ध रोकने की प्रार्थना करती है। इसलिए इसे युद्ध विरोधी कविता कहा जाता है। 2. बोल भारमली (महिला शक्तिकरण)

17. उमरदान इन्होने पाखण्डी साधुओं की आलोचना की थी। छप्पनिया अकाल का वर्णन किया है।	1. अमल रा औगण 2. दारू रा दोस 3. भजन री महिमा
18. शंकर दान सामोर (राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया।)	अंग्रेजा री नीत, देस दर्पण, भागीरथी महिमा, सगती सुजस।
19. हिंगलाज दान कविया (राष्ट्रवादी चेतना का संचार किया।)	आखेट अपजस, मेहाई महिमा, दुर्गा बहतरी
20. करणीदान बारठ	आदमी रा सींग, मंत्रीजी री बेटी, बड़ी बहनजी।
21. मणि मधुकर	पगफेरो, सोजती गेट, आलीजा घरां आज्यों, सफेद मेमने, पत्तों की बिरादरी।

22. मेघराज मुकुल	सैनाणी, चँवरी, कोडमदे, उमंग
23. रामनाथ कविया	द्रौपदी विनय
24. हमीदुल्ला खाँ	दरिन्दे, ख्याल भारमली
25. हरिराम मीणा	हाँ, चाँद मेरा है, धूणी तपे नीर
26. आईदान सिंह भाटी	आँख हिये रा हरियल सुपना, हँसतोड़े होठां रो साँघ।
27. अन्नाराम सुदामा	मैकती काया, मुलकती धरती
28. मन्नू भण्डारी	महाभोज, आपका बन्टी, खोटे सिक्के।
29. चन्द्रप्रकाश देवल	पागी, कावड़, मारग
30. गुलाबचन्द नागौरी	सगाई जंजाल, मारवाड़ी मौसर
31. मुरारिदान	वंश समुच्चय, डिंगल कोष

32. सीताराम लालस	राजस्थानी शब्द कोष
33. लता शर्मा	सही नाप के जूते।
34. हरिश भादाणी	बोलै सरणाटौ, बाथां में भूगोल
35. तेजसिंह जोधा	कठैइ कीं व्हेगौ है
36. पारस अरोडा	जुडाव
37. गोर्वधन सिंह शेखावत	गाँव
38. अर्जुनदेव चारण	रिन्दरोही
39. मालचन्द तिवाडी	कीं उतर्यो है आभौ।

राजस्थानी साहित्य के प्रकार

1. **ख्यात :** - संस्कृत के ख्याति शब्द से बना है जिसका अर्थ "प्रसिद्धि या लोकप्रियता" होता है। देशी राज्यों के राजाओं ने अपने सम्मान, सफलताओं और विशेष कार्यों आदि के विवरण के रूप में अपना इतिहास लिखवा कर संचित किया है। यह इतिहास 'ख्यात' कहलाता है।

- अकबर ने अबुल फजल द्वारा रचित अकबरनामा के समय विभिन्न राजाओं को अपने रियासतों का इतिहास भेजने के लिए कहा अतः उस समय राजस्थान में ख्यात निर्माण प्रारम्भ हुआ।

- **ख्यात दो प्रकार की होती है-**

a. सलंग्न ख्यात इसमें राजाओं का क्रमानुसार वर्णन होता है। जैसे- दयालदास द्वारा रचित बीकानेर रा राठौडा री ख्यात।

b. बात संग्रह इसमें इतिहास की छोटी-बडी अलग अलग घटनाओं का संग्रह होता है । जैसे- नैणसी री ख्यात व बांकीदास री ख्यात।

- **"मुंडियार री ख्यात"** नागौर के मुंडियार गाँव के चारण लेखकों तथा इसमें मारवाड़ के राठौड राजाओं का वर्णन है।

2. **वात :-** वात का अर्थ "कहानी" होता है। किसी ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्र की कहानियों को वात कहा जाता है जिसमें उस पात्र की उपलब्धियों का वर्णन होता है। कहानी की तरह वात कहने और सुनने की विशेष विधा है। कथा कहने वाला कहता चलता है ओर सुनने वाला 'हुंकार' (बीच-बीच में हाँ जैसे शब्दों का प्रयोग, जिससे कथाकार को लगे कि श्रोता रूचि ले रहा है) देता रहाता है। इन वातों में जीवन के हर पक्ष, युद्ध, दर्शन, मनोरंजन पर प्रकाश डाला गया है। गद्यमय, पद्यमय, तथ गद्य पद्यमय तीनों रूपों में वातें मिलती है । 'राव अमरसिंहजी री वात', 'खीचियां री वात', 'पाबूजी री वात', 'कान्हड़दै री वात, अचलदास खींची री वात' वीरम देव सोनगरा री वात (पद्मनाभ), वात (कुशालचन्द) आदि प्रमुख वातें है।

3. **वचनिका :-** इन ग्रन्थों में किसी महापुरूष या किसी राजवंश की उपलब्धियों का वर्णन होता है। इन ग्रन्थों में उपभ्रंश मिश्रित राजस्थानी लिखी जाती है। संस्कृत के 'वचन' शब्द से बना 'वचनिका' शब्द का एक काव्य विधा के रूप में साहित्य में प्रचलित हुआ। 'वचनिका' एक ऐसी तुकान्त गद्य-पद्य रचना है जिसमें अंत्यानुप्रास मिलता है, यद्यपि इसके अपवाद भी मिलते है।

- उदाहरण :- अचलदास खींची री वचनिका, वचनिका राठौड रतनसिंह महेसदासोत री।

4. **दवावैत :-** राजस्थानी के वे ग्रन्थ जिनमें उर्दू एवं फारसी शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है, दवावैत कहलाते है। इसमें किसी महापुरूष की दोहों के रूप में प्रशंसा की जाती है। दवावैत कलात्मक गद्य का एक अन्य रूप है, जो वचनिका काव्य रूप की तरह ही है। वचनिका राजस्थानी में लिखी होती, किन्तु दवावैत उर्दू और फारसी के शब्दों से युक्त होती है। इनमें कथा के नायक का गुणगान, राज्य वैभव, युद्ध, आखेट, नखशिख आदि का वर्णन तुकान्त और प्रवाहयुक्त होता है। 'अखमाल देवड़ा री दवावैत', 'राजा जयसिंह री दवावैत' आदि प्रमुख दवावैत ग्रन्थ है।

5. **विगत :-** राजस्थानी भाषा में लिखे गये इतिहास के ग्रन्थ जिनमें आर्थिक, सामाजिक स्थिति का भी वर्णन होता है, विगत कहलाते है । विगत से किसी विषय का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इसमें इतिहास की दृष्टि से शासक, उसके परिवार, राज्य के क्षेत्र प्रमुख व्यक्ति अथवा उनके राजनीतिक, सामाजिक व्यक्तित्व का वर्णन मिलता है । विगत में उपलब्ध आंकडे आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी रहे है। मुहणोत नैणसी की 'मारवाड़ रा परगनां री विगत' में प्रत्येक परगने की आबादी, रेख, भूमि किस्म, फसलो का हाल, सिंचाई के साधन आदि की जानकारियाँ प्राप्त होती है।

6. **परची :-** संत महात्माओं का जीवन परिचय राजस्थानी भाषा में जिस पद्यबद्ध में मिलता है उसे परची कहा गया है। संत नामदेव री परची, 'कबीर री परची, संत रैदास री परची', 'संत पीपा री परची', 'संत दादू री परची', 'मीराबाई री परची' आदि प्रमुख परची रचनायें है।
7. **प्रकास :-** किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों या घटना विशेष डालने वाली कृतियों को प्रकास कहा गया है। किशोरदास का 'राजप्रकास' आशिया मानसिंह का' 'महायश प्रकास', कविया करणीदान का सूरज प्रकास आदि प्रमुख ग्रन्थ है।

8. **मरस्या :-** राजा या किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद शौक व्यक्ति करने के लिए 'मरस्या' काव्यों की रचना की गई। इसमें उस व्यक्ति के चारित्रिक पुष्पों के अतिरिक्त अन्य महान कार्यों का वर्णन भी किया जाता था। राणे जगपत रा मरस्या मेवाड़ महाराणा जगतसिंह की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए लिखा गया था।
9. **रासो :-** मोतीलाल मेनारिया के अनुसार ''जिस काव्य ग्रन्थ में किसी राजा की कीर्ति', विजय, युद्ध, वीरता आदि का विस्तृत वर्णन हो, उसे रासों कहते है ।" रासो ग्रन्थों में चन्दबरदाई का 'पृथ्वीराज रासों, नरपति नाल्ह का 'बीसलदेव रासो, कुम्भकर्ण का रतन रासों, काशी छंगाणी का छत्रपति रासौ (मतीरे री राड़ का वर्णन), सीताराम रतनू का जवान रासौ प्रमुख है।

10. **रूपक** - किसी वंश अथवा व्यक्ति विशेष की उपलब्धियों के स्वरूप को दर्शाने वाली काव्य कृति रूपक कहलाती हैं 'गजगुणरूपक', 'रूपक गोगादेजी रो', 'राजरूपक' आदि प्रमुख रूपक काव्य है।
11. **साखी :-** साखी साक्षी शब्द से बना है। साखी परक रचनाओं में संत कवियों ने अपने द्वारा अनुभव किये गये ज्ञान का वर्णन किया है। साखियों में सोरठा छन्द का प्रयोग हुआ है। कबीर की साखियां प्रसिद्ध है।
12. **सिलोका :-** सिलोका साधारण पढ़े-लिखे लोगों द्वारा लिखे गये हैं, इसलिए ये जनसाधारण की भावनाओं को आमजन तक पहुँचते है । 'राव अमरसिंह रा सिलोका', 'अजमालजी रो सिलोको', 'राठौड़ कुसलसिंह रो सिलोको', आदि प्रमुख सिलोके है।

FOR FREE CLASSES & PDF
DOWNLOAD THE APP NOW

CLASS24

LIKE
& SUBSCRIBE

GET IT ON
Google Play

ALSO GET FREE QUIZZES & LIVE TEST

राजस्थान के लोकनृत्य

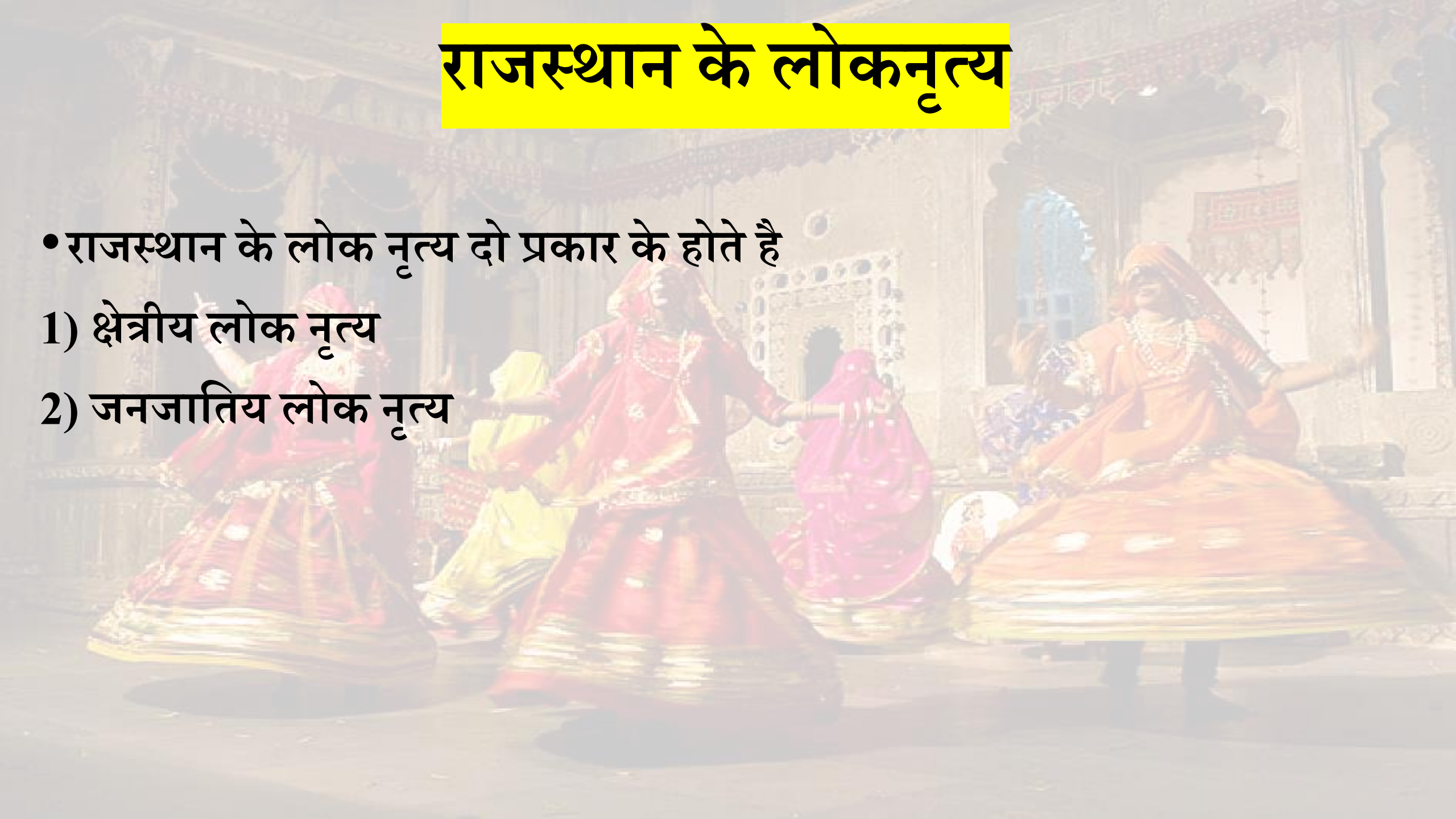

- राजस्थान के लोक नृत्य दो प्रकार के होते है

1) क्षेत्रीय लोक नृत्य

2) जनजातिय लोक नृत्य

क्षेत्रीय लोक नृत्य

1) घूमर

- यह राजस्थान का राज्य नृत्य है।
- इसे राजस्थान की आत्मा कहा जाता है।
- इसमे महिलाएं अपनी धुरी पर घूमती है तथा केवल हाथो का लचक दार प्रदर्शन किया जाता है।
- केवल महिलाओं द्वारा तीज त्योंहार व अन्य अवसर पर किया जाता है
- इसमें 8 चरणो को सवाई कहा जाता है
- मुख्य वाद्ययंत्र ढोल, नगाड़ा, शहनाई

2) कच्छी घोड़ी

- शेखावटी क्षेत्र में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला व्यवसायिक लोक नृत्य है।
- इसे चार पुरुष 2 पंक्तियों में नृत्य करते है
- नृत्य करते समय फूल के खिलने तथा बंद होने का दृश्य सा प्रतीत होता है।
- पुरुषों से लकड़ी की घोड़ी बाँधी जाती है।

3) अग्नि नृत्य

- यह जसनाथी संप्रदाय के लोगो द्वारा किया जाता है
- प्रमुख केंद्र- कतरियासर (बीकानेर)
- विशेषताएँ- (a) जलते हुए अंगारो पर नृत्य
  (b) फते फते की ध्वनि का प्रयोग
  (c) कृषि क्रियाएँ

बीकानेर महाराजा गंगा सिंह द्वारा प्रोत्साहन दिया गया।

4) ढोल नृत्य

- प्रचलन- जालौर क्षेत्र
- शैली- थाकना शैली
- ढोली, माली, सरगड़ा, भील जाति के पुरुषो द्वारा किया जाता है
- इसे जय नारायण व्यास ने इसको प्रोत्साहन दिया था।

5) घुडला नृत्य

- जोधपुर मे महिलाओं द्वारा शीतलाष्टमी से लेकर गणगौर के मध्य यह नृत्य किया जाता है
- इसे राजा सातल की याद में किया जाता था, जिसने घुडले खान को मारा था।
- महिलाएं सिर पर छिद्रित मटका रखकर नाचती है
- मटके में जलता हुआ दीपक रखा जाता है।

कोमल कोठारी

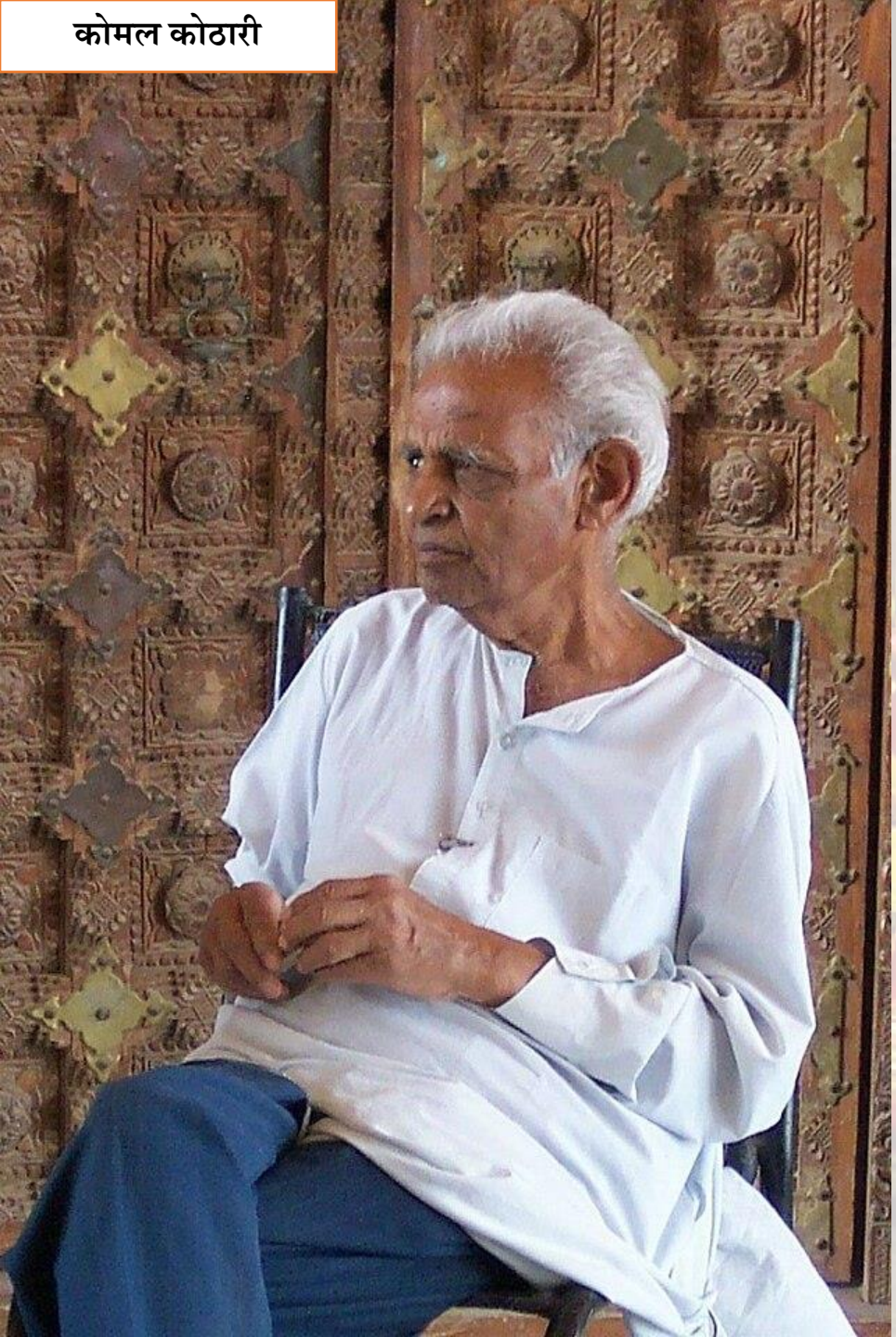

- मणिशंकर गांगुली, कोमल कोठारी, तथा देवी लाल सामर ने इस नृत्य को प्रोत्साहित किया।
- कोमल कोठारी को 2 बार पदम पुरस्कार दिया जा चुका है।
- कोमल कोठरी ने विजय दान देथा के साथ मिलकर 1960 मे बोरुंदा जोधपुर मे रूपायन संस्थान की स्थापना की।
- देवीलाल सामर ने 1952 में उदयपुर मे भारतीय लोक कला मण्डल की स्थापना की जो कठपुतली खेल के लिए जाना जाता है।

6) तेरह ताली

- कामडिया पंथ की महिलाओं द्वारा रामदेवजी के मेले के समय यह नृत्य किया जाता है
- अब यह व्यवसायिक हो गया है
- इसमें 9 मंजीरे दायें पैर मे तथा 2 मंजीरे कोहनियों के पास बांधकर एवं 2 मंजीरे हाथ मे लेकर बैठ कर नृत्य किया जाता है

- नृत्य करते समय महिलाएं करतब दिखाती है
- वाद्य यंत्र - तानपुरा, चौतारा
- मुख्य केंद्र- पादरला (पाली)
- मुख्य कलाकार- मांगी बाई

7) चरी नृत्य

- किशनगढ़ क्षेत्र मे गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य हैं
- महिलाएं सिर पर चरी रखकर नाचती है
- चरी में जलते हुए कपास के बीज रखे जाते है
- मुख्य कलाकार- फलकु बाई

8) भवाई नृत्य

- उदयपुर संभाग में भवाई जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य हैं।
- इसमें संगीत पर कम ध्यान दिया जाता है तथा करतब अधिक दिखाये जाते है
- विशेषताएँ
  - a) तलवार पर नाचना
  - b) अंगारों पर नाचना
  - c) सिर पर 7-8 मटके रखकर नाचना

9) गींदड़ नृत्य

- यह नृत्य शेखावटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- गोल घेरों मे पुरुष डंडे टकराते हुए यह नृत्य करते है
- जो पुरुष महिलाओं के कपड़े पहन कर नाचता है उसे गणगौर कहा जाता है
- मुख्य वाद्य यंत्र- नगाड़ा

10) बम नृत्य

- भरतपुर क्षेत्र मे पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।
- मुख्य वाद्य यंत्र- नगाड़ा (इसे ही बम कहा जाता है)
- इसमें गाये जाने वाले गीत को रसिया कहा जाता है, अत: इस नृत्य को बम रसिया भी कहा जाता है।

11) चंग नृत्य

- होली के अवसर पर शेखावटी क्षेत्र में किया जाता है

12) बिंदौरी नृत्य

- यह होली के अवसर पर झालावाड़ क्षेत्र में किया जाता है

13) डांग नृत्य

- होली के अवसर पर नाथद्वारा क्षेत्र में किया जाता है।

जनजातिय लोक नृत्य

- **भील** – गैर, गवरी, युद्ध, द्विचक्री, नेजा, घूमरा, हाथीमना
- **गरासिया** – वालर, माँदल, लूर, कूद, जवारा, मोरिया, गौर
- **कालबेलिया** - चकरी, शंकरीया, बागड़िया, पणिहारी, इंडोणी
- **कंजर** – चकरी, धाकड़
- **कथोड़ी** – मावलिया, होली
- **मेव** - रणबाजा, रतवई
- **सहरिया** - शिकारी

भील जनजाति के नृत्य

1) गैर

- मेवाड़ क्षेत्र मे भील जनजाति का लोक नृत्य
- यह लोक नृत्य मारवाड़ मे भी होली के अवसर पर किया जाता है तथा इसमें सभी जाती, धर्म के लोग शामिल होते है
- गोल घेरे मे डंडे टकराते हुए पुरुषों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- मुख्य केंद्र- कनाना (बाड़मेर)
- नृत्य मे पहने जाने वाले कपड़े ओगी

2) गवरी

- मेवाड़ मे भील परूषों द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य रक्षा बंधन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है इसे राई नृत्य भी कहा जाता है

3) युद्ध

- इसे तलवार व भाले के साथ किया जाता है।

4) द्विचक्री

- इसे दो चक्र बनाकर किया जाता है।

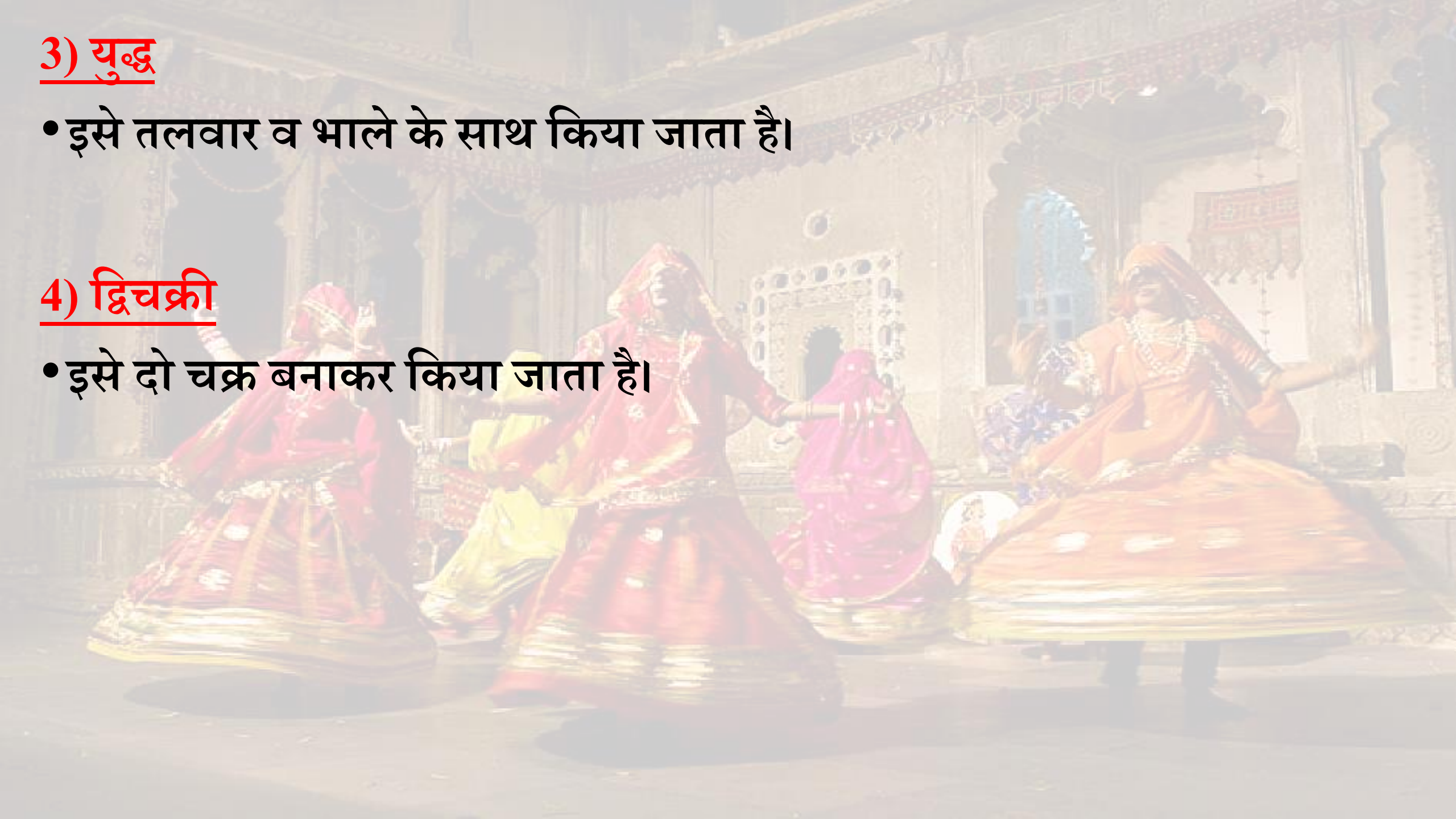

5) नेज़ा

- यह भील तथा मीणा दोनों जनजातियों से संबन्धित नृत्य है
- इसमें महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते हैं
- इसमें लकड़ी के एक डंडे पर नारियल बांध दिया जाता है महिलाए इस नारियल की रक्षा करती है तथा पुरुष इसे उतारने का प्रयास करते है

6) घुमरा

- बांसवाड़ा क्षेत्र में भील महिलाओं द्वारा किया जाता है

7) हथिमाना

- विवाह के अवसर पर पुरुषों द्वारा घुटनों के बल बैठ कर नृत्य किया जाता है

गरासिया जनजाति के नृत्य

1) वालर

- इसे बिना वाद्य यंत्र के किया जाता है।
- इसमें महिला तथा पुरुष दोनों भाग लेते है
- नृत्य करते समय 2 वृत बनाए जाते है।

2) मादल

- इसे मांदल वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है

3) लूर

- लूर गोत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- नृत्य करते समय महिलाओं के 2 पक्ष होते हैं
- इसमें वर पक्ष की महिलाएं वधू पक्ष से कन्या की मांग करती है

4) कूद

- यह बिना वाद्य यंत्र के तालियों की थाप पर किया जाने वाला नृत्य है।

5) जवारा

- गरासिया महिलाओं द्वारा होली के समय हाथों मे ज्वार लेकर यह नृत्य किया किया जाता है

6) मोरिया

- यह विवाह के समय गरासिया पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है।

7) गौर

- यह गणगौर के समय किया जाने वाला नृत्य है।

कालबेलिया जनजाति के नृत्य

1) चकरी

- महिलाएं गोलाकार मुद्रा मे तेज तेज नृत्य करती है
- मुख्य कलाकार- गुलाबों

2) शंकरिया

- प्रेम कहानी पर आधारित कलबेलिया युगल नृत्य

3) बगड़िया-

- भीख माँगते समय कालबेलिया महिलाओं द्वारा किए जाने वाला नृत्य है।
- मुख्य वाद्य यंत्र- पुंगी खंजरी
- काललबेलिया नृत्य युनेस्को की हेरिटेज लिस्ट में शामिल है
- कालबेलिया नृत्य सिखाने के लिए हाथी गाँव मे प्रशिक्षण स्कूल खोला गया है।

कंजर जनजाति के नृत्य

1) चकरी

- इसे महिलाओं द्वारा किया जाता हैं।
- इस नृत्य को करते समय महिलाएं खुसनी नामक वस्त्र पहनती है।

2) धाकड़

- इसे कंजर पुरुषों द्वारा किया जाता है।

कथोड़ी जनजाति के नृत्य

1) मावलिया

- पुरुषों द्वारा नवरात्र के समय किया जाता है।

2) होली

- इसे महिलाओं द्वारा होली के समय किया जाता है।
- नृत्य के दौरान पिरामिड का निर्माण किया जाता है।
- महिलाएँ फड़का साड़ी पहन कर नृत्य करती है।